LIBRARY

School of Planning And Architecture ,Bhopal

S.No. 15 (June)

दैनिक भास्कर 28/06/2024

33 मीटर के दायरे को तय करने से पहले उठने लगे सवाल, कलियासोत नदी या नाला

छोटी हूं तो क्या मेरा अस्तित्व मिटा दोगे

समस्या के समाधान का सही समय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने कलियासोत नदी के 33 मीटर दायरे के निर्माण को हटाने के निर्देश दिए हैं। इस बीच इसके अस्तित्व पर ही सवाल खड़े हो गए हैं। भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने कहा है कि 33 मीटर में जो नोटिस दी जा रही है वह गलत है। पहले जांच हो कि कलियासोत नदी है या नहीं। क्योंकि, इसका कोई स्रोत नहीं है। शर्मा के अनुसार ये बड़ा तालाब के ओवरफ्लो से बनी है। जबकि एक्सपर्ट्स इसे साइंटीफिकली नदी बताते हैं। वे कहते हैं कि इसमें किसी सदावाहिनी नदी से ज्यादा बड़ा जीवनचक्र है। कलियासोत भदभदा से शुरू होकर ये शहर के बीच से गुजरती है। नदी की वजह से ही स्वर्णजयंती पार्क की बायोडायवर्सिटी नजर आती है। बारिश में जब नदी उफान पर होती है तो पानी पार्क में चला जाता है।

कलियासोत से 33 मीटर दायरे में करीब 1100 निर्माण हैं। मेपआइटी ने ड्रोन सर्वे के बाद निगम और जिला प्रशासन ने फिजिकल वैरिफिकेशन कर इन्हें नोटिस दिया है। मास्टर प्लान 2005 में जिक्र है कि नदी से 33 मीटर तक बफर जोन है। और नाले का बफर जोन नौ मीटर है।

नदी की कहानी
पढ़ें अगले अंक में

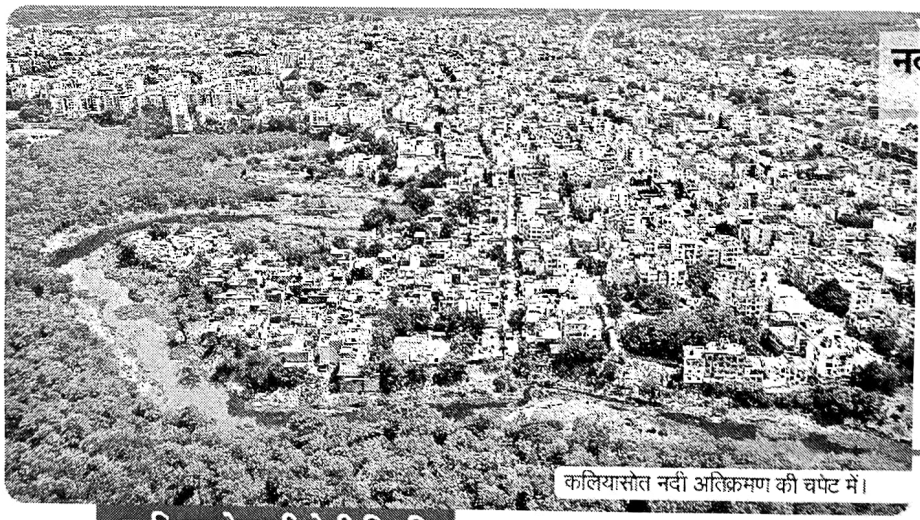

कलियासोत नदी अतिक्रमण की चपेट में।

इन फोटो: रजत शर्मा

नदी को नाला क्यों बनाना चाहते हैं

कलियासोत को नदी को यदि शहर से बारिश का पानी निकालने वाला नाला तय कर दिया जाए तो 33 मीटर के दायरे के बजाय महज नौ मीटर के दायरे में ही कार्रवाई होगी। इससे नदी के 33 मीटर के दायरे में हुए कई बड़े निर्माण कार्य टूटने से बच जाएंगे।

कलियासोत की ऐसी स्थिति

- नदी 8-9 माह सूखी रहती है। **यहां कोई घाट नहीं है।**
- यहां से जलापूर्ति नहीं होती।
- 5 बड़े नालों से नदी में घरेलू वेस्ट डाला जाता है।
- शाहपुरा के पास कोलार रोड से नदी में टीटी नगर, मैनिट, पंचशील नगर, चार इमली, चूनाभट्ठी से मिलता है।
- मंडीदीप के पश्चिमी भाग के नाले से नदी में सीवेज मिलता है।
- मंडीदीप के द.-पूर्वी भाग की बस्तियों का सीवेज मिलता है।
- मिसरोद व यहां की आबादी का सीवेज-गंदगी नदी में जाती है।
- मंडीदीप का औद्योगिक क्षेत्र वाला वेस्ट भी नदी में मिलता है।
- कलियासोत नदी भोजपुर के पास बेलवा में मिलती है। 36 किमी में 500 अतिक्रमण हैं।

36 किमी लंबी नदी

8000 एकड़ से ज्यादा निजी जमीन

एक्सपर्ट का कहना है कि कलियासोत नदी कलियासोत वनक्षेत्र के जलस्रोतों से बनी है। 36 किमी लंबी नदी के किनारे 8000 एकड़ से ज्यादा निजी जमीन है। इसका बहाव भोजपुर से मिसरोद तक 17 किमी है। भदभदा डेम भी नदी में ही है। बड़ा तालाब ओवरफ्लो होता है तो नदी में पानी बढ़ता है। मिसरोद से मंडीदीप की ओर भोजपुर के पास बेलवा में मिलती है।

वैज्ञानिक तौर पर नदी

नदी दो तरह की होती है। एक सदावाहिनी जिनमें एक स्टेज पानी का रहता है। दूसरी इंटरमिटेंट रीवर। नदी पोस्ट मानसून, पुल व ड्राय स्टेज में होती है। कलियासोत इंटरमिटेंट रीवर है। बारिश में बहती है, बाद में इनमें पानी के छोटे पूल होते हैं। गर्मियों में सूख जाती है। बायोडायवर्सिटी के लिए यह अहम है।

सौरभ पोपली, स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर

भोपाल की जीवन रेखा

कलियासोत भोपाल की जीवन रेखा है। नदी का उद्गम बांध, पोखर, वन, पहाड़ कहीं से हो सकता है। इसका अपना एक बहाव क्षेत्र है। अन्य नदियों से प्राकृतिक तौर पर वेनेलाइजेशन है। ये मानव निर्मित नहर नहीं है। इसमें जैव विविधता और जीवन चक्र है।

प्रो. विपिन व्यास, बीयू (वाटर बॉडिज व जलचरों पर काम करते हैं।)

कलियासोत किनारे निर्माण पर नोटिस दिए जा रहे हैं, जबकि निगम ने अनुमति दी है। कलियासोत बड़ा तालाब के ओवरफ्लो से बनी है। 33 मीटर दायरा तय करने के पहले तय हो कि ये नदी है कि नहीं। नदी है तो 1200-1500 करोड़ खर्च कर स्टॉप डेम बनाएं और संरक्षण करें।

रामेश्वर शर्मा, विधायक, हुजूर